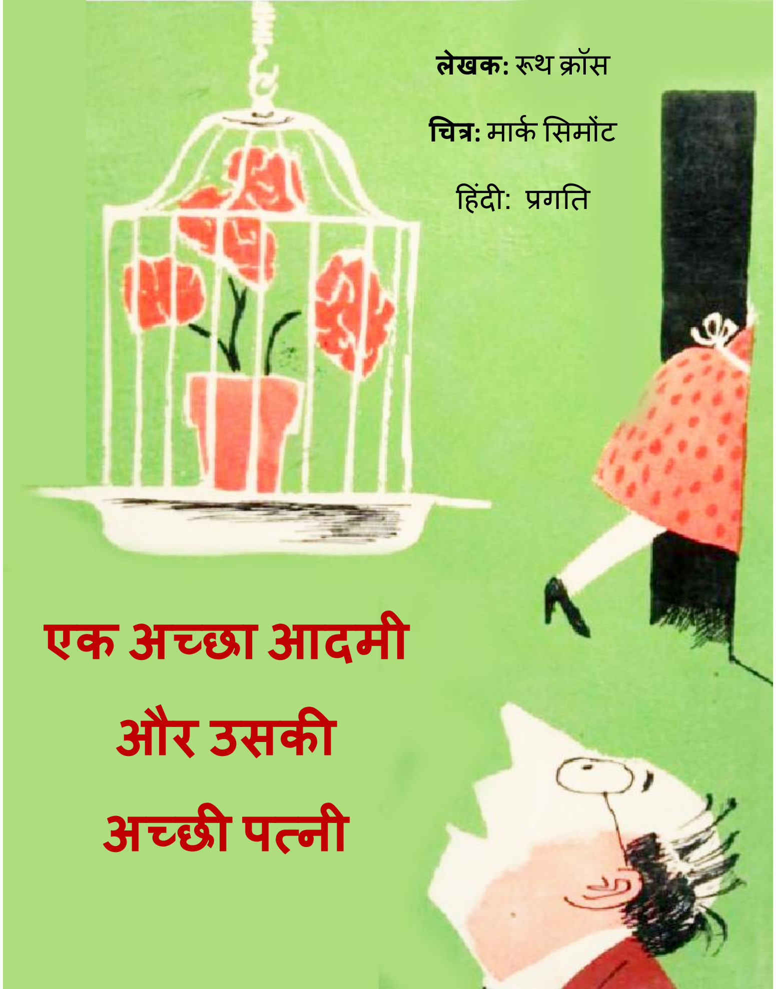
लेखक: रूथ क्रॉस

चित्र: मार्क सिमोंट

हिंदी: प्रगति



एक अच्छा आदमी और उसकी अच्छी पत्नी

एक अच्छा आदमी

और उसकी अच्छी पत्नी



लेखक: रूथ क्रॉस

चित्र: मार्क सिमोंट

हिंदी: प्रगति



एक बार की बात है, एक अच्छा आदमी था और उसकी अच्छी पत्नी थी।



वे एक सुंदर कुटिया में रहते थे। उसमें सफेद दीवारें थीं, लाल परदे थे, और उसमें कई छोटी-छोटी खाने और रैक थे।



वह आदमी और उसकी पत्नी बहुत खुश थे, बस एक बात थी कि वह आदमी कभी चीज़ें ढूँढ नहीं पाता था।



वह अपने जूते ढूँढता,
पर उसे वे नहीं मिलते थे।



वह कोई किताब ढूँढता,
पर किताबें नहीं मिलतीं।





वह कैनरी (पीले पक्षी) को दाना देने जाता,
लेकिन उसे दाना कहीं नहीं मिलता था।

लेकिन इससे कोई फर्क नहीं पड़ता था,
क्योंकि उसे कैनरी (पीले पक्षी) भी नहीं
मिलता था। वह कुछ भी नहीं ढूँढ पाता था।





वह आदमी कहता, “अरे, यह तो बहुत अजीब बात है!” वह कमरे में घूमता और सिर हिलाते हुए बोलता, “सच में, यह तो बड़ी अजीब बात है!”





लेकिन यह उसकी गलती नहीं थी। वह कुछ नहीं ढूँढ पाता था क्योंकि उसकी अच्छी पत्नी हर चीज़ को इधर-उधर कर देती थी। वह बैठक के बीच में रखी मेज़ को खिसकाकर रसोई के कोने में रख देती। और रसोई की मेज़ को उठाकर बगीचे में सेब के पेड़ के नीचे रख देती। वह मुस्कुराकर कहती, “मेरे प्रिय, मुझे एक ही जगह पर चीज़ें देख-देखकर ऊब होती है।” फिर वह पीछे हटकर अपने काम को गर्व से देखती और खुश हो जाती।



वह अपने पति के रविवार वाले कपड़े बैठक के पास वाली अलमारी से निकालकर ऊपर वाली अलमारी में रख देती।

वह सोने के कमरे की दीवार से घड़ी उतारकर बैठक की चिमनी पर रख देती।





और अपने पति की पसंदीदा कुर्सी अंगीठी के सामने से हटाकर कमरे के कोने में रख देती।





उसने अपने छोटे से घर की हर चीज़ इधर-उधर कर दी। वह बोली, “हाँ, हाँ, मैं एक ही जगह पर रोज़ वही सामान देखकर थक जाती हूँ! फिर उसने अपना एप्रन ठीक किया और तसल्ली भरी मुस्कान के साथ अपने काम को देखा।



अब उस अच्छे आदमी को सब कुछ फिर से सीखना पड़ता था।



जब तक वह याद करता कि मछली पकड़ने की छड़ी रसोई के पास वाली झाड़ू रखने की जगह में रखी है, और चिड़ियों का दाना सीढ़ियों के नीचे वाले खाने में है, तब तक उसकी पत्नी सब कुछ फिर बदल देती थी।वह गुस्से में सिर हिलाते हुए कहता, “यह तो फिर वही मूर्खतापूर्ण बात है!” फिर उसने ठान लिया कि अब कुछ करना ही होगा। वह बोला, “मैं इस बार सच में कुछ करूँगा।” वह मुस्कुराया और कहा,

“मैं इसे हमेशा के लिए ठीक कर दूँगा।”









और उसने सच में कुछ किया। उसने अपना जूता सिर पर पहन लिया। उसने मोज़े की पट्टियाँ गले में डाल लीं। और अपनी टाई घुटने पर बाँध ली।





उसने अपनी पैंट को कोट की तरह और कोट को पैंट की तरह पहना, और दोनों को उल्टा पहन लिया।



उसने चश्मा कोहनी पर पहन लिया। मोज़े कानों पर पहन लिए। और फिर रेंगते हुए नीचे चला गया।



वह नाश्ते की मेज़ पर बैठ गया, रूमाल को खा गया, और चेहरे को बिस्कुट से पोंछ लिया।





जब उसकी अच्छी पत्नी ने उसे देखा, वह हैरान रह गई। उसकी आँखें बड़ी हो गईं, हाथों से बर्तन गिर गए। वह मुँह खोलकर अचंभे से देखती रह गई। वह बोली, “अरे, मेरे प्रिय! यह तो बहुत ही अजीब बात है!”

वह आदमी कुछ नहीं बोला, बस रूमाल पर मक्खन लगाता रहा, उसके टुकड़े खाता रहा, और चेहरे को बिस्कुट से पोंछता रहा। उसकी पट्टियाँ गले में लटक रही थीं, और मोज़े कानों पर झूल रहे थे।





पत्नी ज़ोर से बोली, “अरे, यह तो बहुत ही अजीब और हँसी की बात है!” वह आदमी मुस्कुराया और धीरे से बोला, “मेरी प्यारी, मैं भी तो रोज़ एक ही जगह पर एक ही चीज़ें देखकर ऊब जाता हूँ।” और इसी तरह उस अच्छे आदमी ने अपनी अच्छी पत्नी की यह आदत बदल दी।



अब दोनों अपने सुंदर घर में पहले से भी ज़्यादा खुश रहने लगे। घर की सफेद दीवारें, लाल परदे और छोटी-छोटी अलमारियाँ उन्हें बहुत पसंद थीं। अब जब भी वह किताब पढ़ना चाहता, उसे पता होता कि किताब तो हमेशा बुकशेल्फ़ में ही रखी होगी।

